रंग में भंग डालने वाले?

अमेरिकी चुनावों में तीसरे दल और निर्दलीय

लॉरिंडा कीज़ लौंग और दीपांजली काकाती

क्या अमेरिकी राष्ट्रपति पद की दौड़ में कभी कोई कम्युनिस्ट प्रत्याशी रहा है? या कभी कोई निर्दलीय राष्ट्रपति पद के चुनाव में खड़ा हुआ है?

दोनों प्रश्नों का उत्तर है : हां, पिछली सदी में कई चुनावों में निर्दलीय और कम्युनिस्ट प्रत्याशी राष्ट्रपति पद की दौड़ में शामिल रहे हैं। लेकिन उनकी याद कम ही लोगों को है। असल में राष्ट्रपति स्तर पर चुनाव अभियान चलाने के लिए बड़े पैमाने पर लगने वाले धन और समय, मतदान पत्र पर अपनी उपस्थिति दर्ज़ करवाने की प्रक्रिया की जटिलता और रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक पार्टियों जैसे बड़े दलों के प्रत्याशियों के पक्ष में मतदाताओं के झुकाव को देखते इन लोगों के जीतने की सम्भावना होती भी नहीं।

150 वर्ष से भी अधिक समय से रिपब्लिकन या डेमोक्रेटिक पार्टी का प्रत्याशी ही अमेरिकी राष्ट्रपति चुना जाता रहा है। लेकिन अमेरिका के पहले दो राष्ट्रपति और बाद में चार अन्य राष्ट्रपति ऐसे दलों से जुड़े थे जिनका अब नामोनिशान नहीं बचा है। इसके अलावा रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक पार्टी पहले एक ही दल हुआ करते थे।

आज 30 से भी अधिक राजनीतिक दल ऐसे हैं जिन्हें थर्ड पार्टीज़ या तीसरे दल कहा जाता है। इनके प्रत्याशियों के राष्ट्रपति पद पर चुने जाने की संभावना बेहद क्षीण होने के बावजूद चुनाव के दौरान ये प्रमुख प्रत्याशियों के मताधार में सेंध लगा लेते हैं, इसलिए इन्हें 'स्पॉइलर्स' या खेलबिगाड़ू भी कहा जाता है।

साउथ कैरॉलाइना के प्रेस्बायटीरियन कॉलेज के राजनीतिशास्त्र के अवकाश प्राप्त प्राध्यापक और *पॉलिटिक्स एट द पेरिफेरी : थर्ड पार्टीज़ इन टू-पार्टी अमेरिका* के लेखक जे.डेविड गिलेस्पी ने पाया कि थर्ड पार्टीज़ की भूमिका को नजरंदाज़ नहीं किया जा सकता – वह मतदाताओं को मुद्दों पर शिक्षित करने से लेकर शासकीय नीति में वास्तविक परिवर्तन लाने का दबाव बनाने तक, कई महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

गिलेस्पी कहते हैं कि यथास्थिति से असंतुष्ट लोगों के लिए एक संविधानसम्मत विकल्प उपलब्ध करवाकर थर्ड पार्टीज़ दरअसल शासन को मज़बूत कर रही होती हैं। अपनी बात को स्पष्ट करते हुए वह कहते हैं, ''असहमति को चुनावी प्रक्रिया के अंदर ही स्वर मिल जाता है जिससे शायद देश में राजनीतिक कार्रवाई के हिंसक या अधिक आक्रामक तरीकों की सम्भावना कम हो जाती है।''

तो फिर थर्ड पार्टीज़ ऐसे प्रयास में समय और संसाधन खर्च क्यों करती हैं जिसमें फल की प्राप्ति की सम्भावना दूर-दूर तक नहीं दिखती? बात यह है कि उनका उद्देश्य प्रत्याशी खड़े करना नहीं, मुद्दे खड़े करना है। वे मतदाताओं का ध्यान जलवायु परिवर्तन, परमाणु हथियारों की बढ़ती होड़ और गरीबी जैसे मुद्दों की ओर आकर्षित करना चाहते हैं और अक्सर इस प्रयास में इतने सफल होते हैं कि राष्ट्रपति पद का कोई महत्वपूर्ण प्रत्याशी उस मुद्दे पर अपना रुख बदल देता है।

2008 के राष्ट्रपति पद के चुनाव में मतपत्र पर कई दलों के प्रत्याशियों के नाम होंगे। कांस्टिट्यूशन पार्टी, ग्रीन पार्टी और लिबर्टेरियन पार्टी जैसे ये दल इन गर्मियों में अपने प्रत्याशी चुनेंगे।

इस बार के चुनाव में एक उल्लेखनीय प्रत्याशी राल्फ़ नैदर होंगे। उपभोक्ता हितों के रक्षक के रूप में विख्यात नैदर वर्ष 2000 में भी राष्ट्रपति पद के चुनाव की दौड़ में शामिल रहे थे, तब ग्रीन पार्टी के प्रत्याशी के रूप में उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर 2.7 प्रतिशत मत मिले थे। डेमोक्रेटिक पार्टी के कई नीति निर्माताओं का विचार है कि उस चुनाव में नैदर का चुनाव में खड़ा होना ही अल गोर की हार का कारण बना। फ़्लोरिडा में बुश और गोर के बीच कुल 537 मतों का अंतर था। वहां नैदर को 97,488 मत मिले। एक्ज़िट पोल से पता चला कि मत देने वालों ने नैदर को अपने मत न दिए होते तो ये मत गोर के ही पक्ष में जाते।

अमेरिकी मतदाताओं में बाहरी या कमज़ोर प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करके मुख्य धारा दलों को झटका देने की प्रवृत्ति के चलते भी थर्ड पार्टीज़ और स्वतंत्र प्रत्याशियों में रुचि बरकरार रहती है। और वैसे देखा जाए तो यह विचार ही काफी रोमांचक है कि राष्ट्रपति पद के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा से भरे चुनाव में कोई ऐसा प्रत्याशी मुख्य धारा दल के इतने मत खींच ले कि उसकी जीत के लाले पड़ जाएं।

अमेरिका के इतिहास में ऐसा कई बार हो चुका है। 1912 में पूर्व राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट के बुल मूज़ पार्टी के प्रत्याशी के रूप में खड़े होकर 27 प्रतिशत से अधिक मत पाने का परिणाम यह हुआ कि रिपब्लिकन पार्टी के मत कम हुए जिससे डेमोक्रेट प्रत्याशी वुडरो विल्सन की जीत का रास्ता साफ हो गया। 1968 में जॉर्ज वैलेस और 1992 में रॉस पेरॉ ने दोनों प्रमुख दलों के काफी मत काटे।

नवम्बर में राष्ट्रपति पद के लिए मतदान के मतपत्र पर स्वतंत्र प्रत्याशियों के नाम छापने को लेकर हर राज्य के अपने नियम हैं। सभी 50 राज्यों में नामांकन की अंतिम तिथियों की शर्त पूरी करने के लिए अधिकांश उम्मीदवार मार्च के मध्य तक अपनी उम्मीदवारी की घोषणा कर देते हैं।

2000 और 2004 में 12 थर्ड पार्टीज़ के नाम कुछ या सभी राज्यों के मतपत्रों पर दर्ज़ थे। शराब की बिक्री के विरोधी मद्यनिषेधी दल और विभिन्न समाजवादी समूह बस कुछ ही राज्यों में मतपत्रों पर अपनी उपस्थिति दर्ज़ करवाने लायक ही मत जुटा पाए। लेकिन 2004 में अन्य दल 50 में से आधे राज्यों के मतपत्रों पर उपस्थित थे: पर्यावरणीय सरोकारों से जुड़ी ग्रीन पार्टी 28 राज्यों में, ईसाई कट्टरवादी दल कांस्टिट्यूशन पार्टी 38 राज्यों में, वित्तीय स्तर पर रूढ़िवादी और सामाजिक रूप से उदार लिबर्टेरियन पार्टी 49 और उदार सुधारवादी रिफॉर्म पार्टी 37 राज्यों में मतपत्रों पर उपस्थित रहीं।

इन स्वतंत्र या निर्दलीय प्रत्याशियों की राह में सबसे बड़ी बाधा है मतदाताओं के मन में अपने मत 'बेकार' होने का डर। कई अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि इन प्रत्याशियों के मुद्दों और नीतियों से सहमत होते हुए भी अक्सर मतदाता किसी प्रमुख दल के प्रत्याशी को ही मत देते हैं।

इसके अलावा भी थर्ड पार्टीज़ के पास बड़े राजनीतिक दलों जैसे राज्यव्यापी संगठन नहीं होते। उनके पास चुनाव अभियान चलाने के लिए पर्याप्त कौशल नहीं होता। उन्हें टेलिविज़न पर चर्चा के लिए कम ही बुलाया जाता है और मीडिया भी उन पर उतना ध्यान नहीं देता। सत्ता में न होने, कम विख्यात होने के कारण वे इतने आर्थिक संसाधन नहीं जुटा पाते जो अब अमेरिकी राष्ट्रपति पद की दौड़ का अनिवार्य अंग हो चुके हैं। अक्सर उनकी ऊर्जा चुनाव प्रचार के बजाय आर्थिक संसाधन जुटाने में ज़्यादा खर्च होती है।

अमेरिकी विदेश विभाग के ब्यूरो ऑफ़ इंटरनेशनल इन्फॉर्मेशन प्रोग्राम्स से प्राप्त सामग्री पर आधारित।

© पी.ए.-इमेज़ बैंक

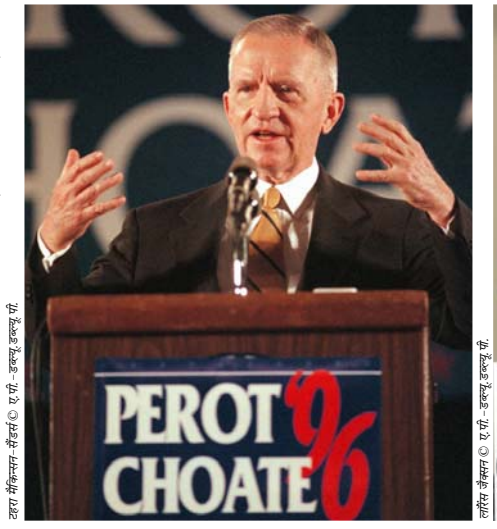

लॉरेंस मैंकलन-सैंडर्स © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

लॉरेंस मैंकलन © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

बिल्कुल ऊपर: पूर्व राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट 1904 के एक दृश्य में। उन्होंने 1912 के चुनावों में तीसरे दल के उम्मीदवार के रूप में प्रचार किया।

ऊपर: रिफ़ॉर्म पार्टी के राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार रॉस पेरो 1996 में अपने प्रचार अभियान के दौरान।

ऊपर दाएं: राष्ट्रपति पद के निर्दलीय उम्मीदवार राल्फ नैदर (दाएं) फ़रवरी 2008 में वाशिंगटन, डी.सी. में एक संवाददाता सम्मेलन में सैन फ्रांसिस्को बोर्ड ऑफ़ सुपरवाइजर्स के पूर्व सदस्य मैट गोंज़ालेज़ को अपना साथी उम्मीदवार चुनने की घोषणा करते हुए।